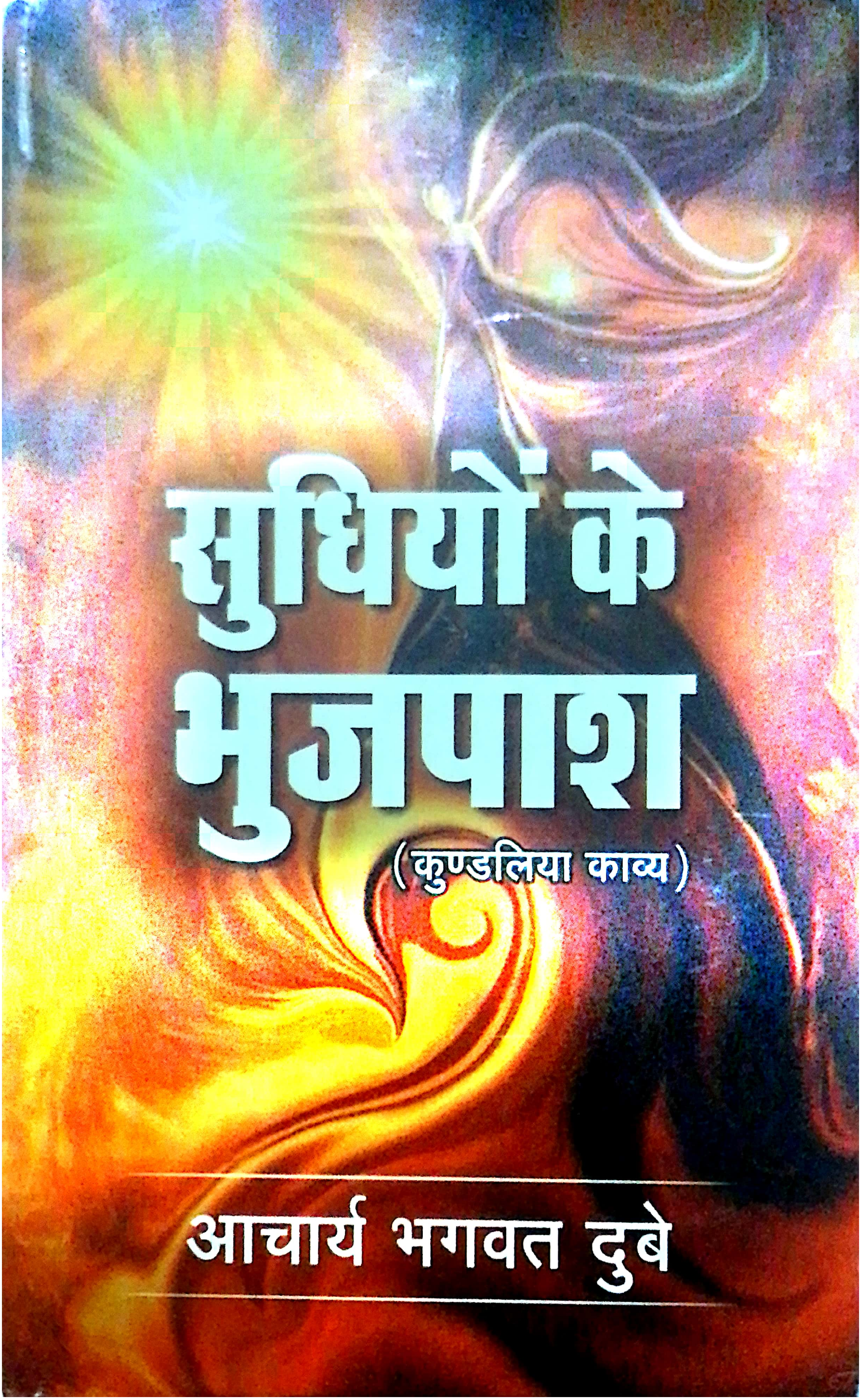

सुधियों के भुजपाश

(कुण्डलिया काव्य)

आचार्य भगवत दुबे

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-93-83598-74-8

सुधियों के भुजपाश
SUDHIYON KE BHUJPASH

- कवि
  आचार्य भगवत दुबे

- सर्वाधिकार
  आचार्य भगवत दुबे
  2672, पिसनहारी की मढ़िया के पास,
  पो. गढ़ा, जबलपुर - 482 003
  मो. : 93006 13975

- संयोजना
  राजेश पाठक 'प्रवीण'
  मो. : 98272-62605

- प्रथम संस्करण
  2017

- प्रकाशन
  पाथेय प्रकाशन
  डॉ. हर्ष कुमार तिवारी
  112, सराफा वार्ड,
  जबलपुर फोन : 0761-2652027

- शब्द संयोजना
  मारबल कम्प्यूटर, जबलपुर
- मुद्रक
  अमृत आफसेट, जबलपुर

- मूल्य
  250/-

Sudhiyon Ke Bhujpash
by Acharya Bhagwat Dubey

Scanned with OKEN Scanner

समर्पण

स्व. श्रीमती विमला दुबे

जन्म : 1 मई 1944 निधन : 10 मई 1989

प्रिये समर्पित है तुम्हें, यह कुण्डलिया काव्य
इस जीवन में तो नहीं, मिलन की अब संभाव्य

मिलन की अब संभाव्य, बनी फिर भी प्रत्याशा
सुधियों में फलवती, निरंतर होती आशा

कह भगवत कविराय, किया जो कुछ भी सर्जित
तुमको ही कर रहा, काव्यकृति प्रिये समर्पित

Scanned with OKEN Scanner

1. यादों का मधुमास

मुझे सताती है प्रिये, सदा तुम्हारी याद
सब कुछ लगता पूर्ववत्, तीन दशक के बाद

तीन दशक के बाद, लगे तुम आस-पास हो
यादों का मधुमास, न कम जिसका उजास हो

कह भगवत कविराय, न इक पल को है जाती
कितनी मादक लगे, याद जो मुझे सताती

2. अर्धांगिनी ललाम

विमला जी की याद में, सदन 'विमल स्मृति' नाम
रहीं परायण धर्म में, अर्धांगिनी ललाम

अर्धांगिनी ललाम, चारुता थी चरित्र में
सबको बाँधे रखा, प्रेम पावन पवित्र में

कह भगवत कविराय, दुखी है अनुजा मिथिला
यादों में हो बसी, प्राण प्रिय प्यारी विमला

Scanned with OKEN Scanner

3. आँसू की जागीर

सब कुछ छीना वक्त ने, बढ़ी विरह की पीर
छीन नहीं पाया मगर, आँसू की जागीर

आँसू की जागीर, यही तो अक्षय धन है
इसके ही आधीन हुआ, नीरस जीवन है

कह भगवत कविराय, लिखा एकाकी जीना
बस आँसू को छोड़, वक्त ने सब कुछ छीना

4. सुधियों के भुजपाश

फीके-फीके हो गये, प्रिये सरस मधुमास
जकड़े रहते हैं मुझे, सुधियों के भुजपाश

सुधियों के भुजपाश, कसकती रहतीं यादें
छीनें दिन का चैन, रात की नींद उड़ा दें

कह भगवत कविराय, न हो यह साथ किसी के
प्रिया-बिना त्यौहार, लगा करते हैं फीके

Scanned with OKEN Scanner

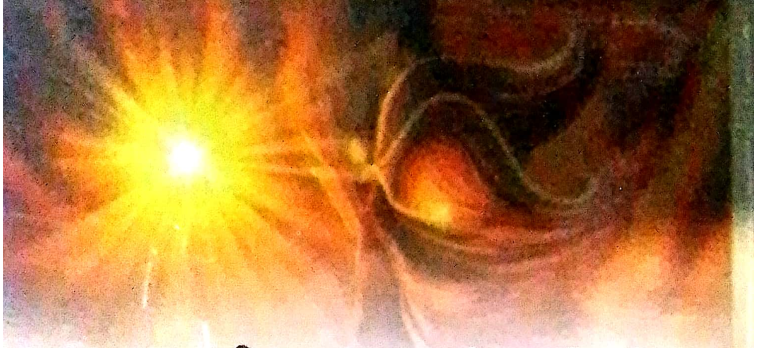

कुण्डलिया एक मात्रिक विषम छन्द है। यह दोहा परिवार का छन्द है।

एक दोहा तथा दो रोला से मिलकर कुण्डलिया छन्द बनता है। कुण्डलिया में 6 चरण होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में चौबीस मात्राएँ होती हैं। कुण्डलिया का आरम्भ जिस शब्द या शब्द समूह से होता है उसका अन्त भी उसी शब्द या शब्द समूह से होता है। कुण्डलिया की प्रथम दो पंक्ति दोहे की तथा बाद की चार पंक्तियों में दो रोला होते हैं। इन पंक्तियों को चरण कहा जाता है। दोहे की दोनों पंक्तियों के अन्त में गुरु, लघु का तुकान्त होता है। इसके विषम चरणों, पहले एवं तीसरे में 11-11 मात्राएँ होती हैं तथा चौथे और दूसरे सम चरणों में 13-13 मात्राएँ होती हैं।

कुण्डलिया के प्रथम दो चरण दोहा के तथा बाद के चार चरण दो रोला के होते हैं। दोहा के चौथे चरण से प्रथम रोला का प्रारम्भ होता है तथा दूसरे रोला का अथवा कुण्डलिया का समापन दोहे के प्रथम शब्द या शब्द समूह से होता है। रोला के सभी चरणों का अंत दो गुरु से हो तो अच्छा है। दो गुरु, चार लघु, एक गुरु, दो लघु अथवा दो लघु एवं गुरु कुण्डलिया के अन्त में आना काव्य की अनिवार्यता है।

Scanned with OKEN Scanner

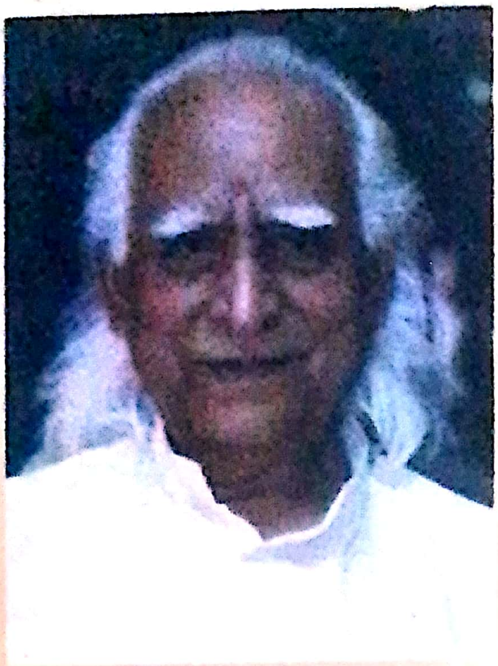

कविवर

आचार्य भगवत दुबे

जबलपुर, मो. 9300613975

आकर्षक छवि में ब्रह्मर्षि सा तेज लिये उन्नत ललाट, दूधियाँ चाँदनी से चमकते लम्बे केश, गौरवर्ण आभा, वाणी में शहदीली मधुरता, व्यक्तित्व में चुम्बकीय आकर्षण संग जो छवि दृष्टव्य होती है वह संज्ञा हैं - आदरणीय आचार्य भगवत दुबे।

आचार्य जी के सृजन में मन के रसायन और भावों की संरचना का विलक्षण समन्वय है। उनकी प्रज्ञाप्रौढ़ लेखनी ने अन्तः और बाह्य संघर्षों के विविध रूपों के साथ मानवीय स्थिति को करुणामय भाव से सृजित किया है।

आचार्य जी के अक्षर-दर्शन समरसता और अध्यात्म के साथ जीवन का उद्घोष करते हैं। सृजन ऋषि आचार्य भगवत दुबे जी को प्रणाम सहित

राजेश पाठक 'प्रवीण'
संयोजक सचिव 'पाथेय'
सनाढ्य संगम, जबलपुर
मो. : 98272 62605

ISBN : 978-93-83598-74-8

पाथेय प्रकाशन, जबलपुर

Scanned with OKEN Scanner